रंग हैं कि जादू!

सुगंधा उपासनी व ब्लेज़ जोसेफ

झाबुआ के थांडला ज़िले में कला की एक कार्यशाला हुई। इसमें उन बच्चों ने भाग लिया जो गाय-भैंस चराते हैं। यह कार्यशाला "नेग फायर" नामक एक संस्था की सहायता से आयोजित की गई थी। इन बच्चों के लिए यह अपनी किस्म का पहला मौका था। वे अलग-अलग माध्यमों जैसे रंग, मिट्टी, कपड़े आदि द्वारा अपनी रचनाएँ कर रहे थे। इस कार्यशाला के द्वारा बच्चों की भावनाएँ, क्षमताएँ बाहर आईं। उनकी सोच, कल्पनाएँ और आज़ाद, बुलन्द आवाज़।

भारत, पप्पी, राजेश, टिम्मू, राजा, राहुल, गुड्डू, बिन्दू, कैलाश, जोसेफ

विनोद

बिन्दू, जोसेफ, राहुल, भारत

आसमान पर बिखरे मन के रंग
एक कहानी बताते हैं।

होंठों पर जो गीत हैं,
अन्दर के सुरों का राग सुनाते हैं।

ज़िन्दगी के हर पल को
अपना बनाने में ही कला है ...

हर इन्सान एक कलाकार है
हर एक के मन में
कोई राग है, कोई चित्र है, कोई इच्छा है

कला अभिव्यक्ति है
अन्दर की आवाज़ है
जो हर कोई सुनता है

बीजू

पप्पी, टिम्मू, बीजू, गुड्डू

राजू

बच्चे मन में बसे चित्र कागज़ पर उतार देते हैं। उनकी स्वच्छन्द, सहज अभिव्यक्ति इशारा करती है उनके अन्दर के एक छिपे कलाकार की ओर।

शायद इसीलिए महान चित्रकार पिकासो ने कहा था – मुझे पचहत्तर साल लग गए एक बच्चे की तरह चित्रकारी करने में।

राजेश, विनोद, कैलाश, राजा